Contribution of Pandit Virbhadra Arya in Hyderabad Freedom Struggle

स्वतंत्रता सेनानी पंडित वीरभद्रजी आर्य का हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन में योगदान

प्रा.डॉ.व्यास सी.पी.
के.के.एम.कॉलेज,
मानवत जि.परभणी महाराष्ट्र

Key – स्वतंत्रता सेनानी वीरभद्रजी आर्य– निजाम– हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन

Abstract– आधुनिक भारत के इतिहास में भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत भले ही 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों के गुलामी से स्वतंत्र हुआ। पर भारत में एक ऐसा भी हिस्सा रहा जो की 15 अगस्त 1947 से 17 सितंबर 1948 तक निजाम की गुलामी, जुल्म, अत्याचार सहता रहा । ऐसा हिस्सा जिसे हैद्राबाद स्टेट या निजाम स्टेट के नाम से जाना जाता है। इस निजाम की गुलामी, जुल्म, अत्याचार, हिंसा आदी से बाहर निकलने का प्रयास मराठवाडा (महाराष्ट्र) के लोगों ने किया। जिसमें महिलायें–पुरूष–बालक, किसान, मजदूर आदी घटकोंने विरोध किया। इस कार्य में हर स्थान से गहरा विरोध होता रहा। इसी काम में महाराष्ट्र के लातूर जिले के औराद शहाजानी नामक गॉव के पंडित वीरभद्र आर्य इन्होंने निजाम और उसके साथियों का विरोध आखरी क्षण तक किया। इसमें उन्हें निजाम और उसके साथियों द्वारा कई प्रकार से प्रताडित भी किया गया। कई बार जेल भी हुई। उनके देशभक्ति पर कार्य से औराद शहाजानी और परिसर के लोग उनके साथ हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन में सहभागी हुए। पंडित वीरभद्र आर्य और उनके तरह कार्य करनेवाले सभी लोगों के किये देशभक्ति पर कार्यों को आज समाज के सामने लाना आवश्यक है। इन सभी के महत्वपूर्ण कार्य से ही निजाम स्टेट 17 सितंबर 1948 को स्वतंत्र हो पाया और आज के भारत में सम्मिलित हुआ। इस घटनाक्रम का इतिहास जो लिखा गया है और इसके आगे लिखा जायेगा इसे इतिहासलेखन की दृष्टि से लिखा जाना आवश्यक है। इसमें जिन–जिन व्यक्तीयों, संस्थाओं, स्त्री–परूषों, स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतीकारक, किसान, मजदूर आदीयों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान इस कार्य में दिया उनके नामों का उल्लेख आना आवश्यक है।

प्रस्तावना

महाराष्ट्र के लातूर जिले में औराद शहाजानी नामक गॉव महाराष्ट्र तथा कर्नाटक की सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित है। हिन्दुस्थान मुघल साम्राज्य की समाप्ती के बाद याने अंग्रेजों के आने के पहले सेंकडों संस्थानों में बिखरा पडा था। इन सेकडों संस्थानों को इक्कठा करने का और उस राज्यपर राज करने का कार्य अंग्रेजों ने आधुनिक काल में किया। अंग्रजों का शासन काल पहले सभी को अच्छा और विकास करनेवाला लगा। अंग्रेजों ने भारत में अपनी जरूरतों के हिसाब से विकास किया। जिसमें उन्होंने भारतीय लोगों को कुछ सुविधायें भी प्रधान की। यह सुविधा भले ही नयी थी, पर इन सुविधाओं में अंग्रेजों के विकास को बढावा देना यही मुख्य उद्देश्य अंगेजी शासकों का रहा। इसी काल में महाराष्ट्र के मराठवाडा, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश के प्रदेश पर निजाम का राज रहा। निजाम ने भी अपने प्रदेश में विकास सुरूवाती दौर में किया। यह विकास जन समुदाय के जरूरतों को मद्देनजर रखकर किया गया नही था। उसमें भी निजाम के स्वार्थ की गंध भरी थी। वह उस समय का बडा और बलवाल संस्थानिक बन गया। जो की हिंन्दुस्थान के एक बडे प्रदेश का प्रमुख बन गया था।

निजाम के शासन काल के इसी प्रदेश को निजाम स्टेट या हैद्राबाद स्टेट के नाम से जाना जाता रहा। इस प्रदेश पर आखिर तक यानी मुघल सत्ता के पश्चात और स्वतंत्र भारत के निर्माण तक के बीच के काल में निजाम की

सत्ता रही। अंग्रेजी शासन और अंग्रेजी विकास के विचार भी इस प्रदेश में नही आये। इस प्रदेश का सर्वेसर्वा केवल निजाम सत्ताधीश रहे। निजामोने इस प्रदेश में कुछ विकास जरूर किये वे केवल निजाम स्टेट को आगे ले जानेवाले थे, आधुनिक काल में भारत के अन्य स्थानों पर होनेवाले विकास से उन्हें कुछ भी लेना देना नही था। निजाम के शासन काल में प्रदेश के जनता पर अननविद अत्याचार ढॉये जाते। जिसमें स्त्री–पुरूष–बालक, मजदूर, किसान, जनसामान्य, व्यापारी कोई भी छुट नही पाया। इस में समाज के हर वर्ग पर अननविद अन्याय, अत्याचार, शोषण होता रहा। इन होनेवाले अन्याय, अत्याचार, शोषण के विरोध में आवाज उठाने की किसी में ताकद नही थी। पर आगे चलकर नयी विचारधारावाले, प्रगतीशिल विचारधारावाले, स्वतंत्रता की विचारधारावाले कई लोग समाज में उभरकर आगे आये। जिनमें कई स्त्री, पुरूष, बालक, किसान, समाजसेवक आदी का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा। इन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के कार्य से ही यह प्रदेश स्वतंत्र हो पाया।

भारत भले ही 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ, पर निजाम स्टेट की जनता भारत के स्वतंत्र होने के बाद भी 13 महिन 2 दिन तक स्वतंत्र नही हो पायी थी। इस प्रदेश को स्वतंत्र करवाने के लिये भारत सरकार द्वारा सरदार वल्लभभाई पटेलजी को इस प्रदेश में पोलीस एक्शन करानी पडी थी। उसके बाद ही यह प्रदेश 17 सितंबर 1948 को स्वतंत्र होकर, स्वतंत्र भारत में सम्मिलीत हो पाया था। इस कार्य में इस प्रदेश के कई व्यक्तियों ने निजाम और निजाम सरकार का विरोध करने का कार्य कई वर्षां से किया था। इस कार्य में इस प्रदेश के कई लोगों का सहयोग रहा।

उसी तरह से महाराष्ट्र के लातूर जिले के औराद शहाजानी नामक गॉव के स्वतंत्रता सेनानी पंडित वीरभद्रजी आर्य का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा। पंडित वीरभद्रजी आर्य का जन्म सन 1902 में हुआ। उनका पुरा नाम वीरभद्र लिंगप्पा तुगावे था। वीरभद्रजी के जन्म के पॉच वर्ष में ही उनके पिताजी का साया उनपर से हट गया था। वीरभद्रजी को बचपन से ही पिताजी के साये के बिना ही अपना जीवन व्यथित करना पडा। इस परिस्थिती में समाज तथा अन्य कठिनाइयों से उन्हें कम उम्र से ही झुंजना पडा। उनके जीवन काल में बचपन से ही कठिनाईयॉ रही । उन्हे अपने जीवन में इन विपदाओं का सामना बचपन से लेकर बुढापे तक करना पडा।

वीरभद्रजी ने अपनी शुरूवाती शिक्षा की सुरूवात उदगीर नामक गॉव से की। आज उदगीर लातूर जिले का एक तहसील है। उन्होंने अपनी अगली पढाई गुरूकुल से ग्रहण की। वीरभद्रजी अपनी यहॉ की शिक्षा पूर्ण कर 16 वर्ष की आयु में पुनः अपने गॉव यानी औराद शहाजानी को लौट आये। इस समय में इस युवा के व्यक्तितत्त्व को देशप्रेम की धारा से उभार आ गया था। इसी वजह से वे हमेशा बेचैन रहे, जिससे उन्हें हमेशा स्वतंत्रता और अन्याय के विरोध के लिए प्रोत्साहन मिलता रहा। वीरभद्रजी आगे चलकर उम्र की 22 वर्ष की आयु से निजाम के अन्याय और अत्याचार से भरी परंपरा के खिलाफ प्रेरित हुए। उन्होंने निजाम काल के अत्याचार के विरोध में मुहतोड जवाब दिया। वीरभद्रजी ने अपने जीवन को और अधिक रूप से उजागर करने में समर्थ रामदासजी और स्वतंत्रता के वीर सावरकर जी को ही अपने जीवन में श्रध्दा स्थान माना। इसीलिए उनके विचारों में प्रखरता दिखती है। उसी के साथ उनमें स्वतंत्रता की ज्वाला को बढावा देने का कार्य भाई बन्सीलालजी आर्य के विचारों ने भी किया। वीरभद्रजी ने औराद शहाजानी नगरी में भाई बन्सीलालजी आर्य इनकी प्रेरणा लेकर सन 1928 में आर्य समाज की स्थापना इस नगर में करवाई। सन 1928 से आज तक औराद शहाजानी और इसके आस पास भी आर्य समाज गतिमान है।

वीरभद्रजी आर्य स्वतंत्रा के विचारों से प्रभावीत थे, साथ ही साथ वे प्रभावी वक्ता भी थे। अतः जब वे लोगों के सामने खडे होकर भाषण करते तो उनकी गंभीर मुद्रा, तेजस्वी नयन, गठीत शरीर, शब्दों का माधुर्य, हिंदी की सरलतम लेकिर शेर–शायरी, कबीर या संतो ंके वचन व्यापक जीवनानुभवों के उदाहरण अन्याय का सच्चा और प्रभावी चित्रण, साथही सोदाहरण प्रवाही और सिंहनाद जैसी गंभीर पहाडी वाणी सच में सुननेवालों को मंत्रमुग्ध कर देती थी। जिसे सुनने के लिए लोग सदैव लालान्वित रहते थे। उससे कई युवक–युवतियॉ, बालक, स्त्री–पुरूष प्रभाव तथा प्रेरणा पाते थे और संघर्ष के सदैव लिए तयार हो जाते थे।

औराद शहाजानी और परिसर में महत्वपूर्ण योगदान–

हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन के महत्वपूर्ण कार्य में पंडित वीरभद्रजी आर्य इनका योगदान महत्वपूर्ण रहा। इसकी सुरूवात उन्होंने औराद शहाजानी और उसके परिसर में गॉवों से की। उन्होंने युवाओं के मन में स्वतंत्रता के विचार तो बोये साथ ही साथ उन्होंने आर्य समाज के ध्येय, उद्देश्यों के अनुरूप और जन समुदाय को संघठित करने का महतम कार्य किया। जिसका फायदा उन्हें हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन में हुआ। धीरे–धीरे पंडित वीरभद्रजी का कार्य अब हैद्राबाद के निजाम की कठोरता, अन्याय और अत्याचार के विरोध में बढता रहा। वे निजाम और रजाकारों के विरोध में कार्य करने लगे। इसके फल स्वरूप उन्हें कई बार जेल में भी जाना पडा। अन्यायी निजाम और अन्यायी रजाकारों द्वारा उनके विरोध में कार्य उनके माध्यम से होता रहा और किसी न किसी तरह से उन्हें कोई न कोई कारण से जेल भेजा जाता था।

आगे चलकर सन 1932 में औराद शहाजानी में मोहर आते ही दंगा–फसाद का उद्भव हुआ। निजाम के अधिकारियों ने मौका देखकर पंडित वीरभद्रजी का गिरफ्तार किया। अर्थात पंडित वीरभद्रजी और उनके साथियों ने भले ही इस समय तनाव न ही बढाया हो फिर भी निजामी अधिकारी जरूर तनाव बढा देते थे। उसी तरह आगला प्रसंग था नागदीपोत्सव का, इस त्यौहार के पहले दिन गुंजोटी (उमरगा जि.उस्मानाबाद, महाराष्ट्र) के वेदप्रकाश शत्रुओं के चंगुल में फॅस गये। उन्होंने तो मानों मातृभूमिपर न्योछावर होने की प्रतिज्ञा कर ली थी । वह कैसे भाग खडा होता कुछ अरब, पठाण, इत्तेहादुल के लोगों ने बडी क्रुरता से उसका सिर धड से अलग कर डाला। वीर वेदप्रकाश ने धर्माभिमानी संभाजी की तरह खुद को न्योछावर कर दिया परंतु धर्म परिवर्तन करना मंजुर नही किया। ऐसे वेदप्रकाश के बलिदान के उपरांत 'वेद प्रकाश दिवस' की घोषणा की गई। इस समय भाई बंन्सीलालजी आर्य के साथ पंडित वीरभद्रजी भी थे। इस घटना ने उनके मन में देश प्रेम की भावना को और अधिक रूप से प्रज्वलित और गतिमान किया।

सन 1938 में सशस्त्र संघर्ष हुआ। इस सशस्त्र संघर्ष में हैद्राबाद के मुक्ति आंदोलन के प्रभावी नेता के रूप में निजाम सरकार की नजर पंडित वीरभद्रजी पर सदैव लगी रहती थी। पंडित वीरभद्रजी आर्य को पकडने के लिए सन 1938 में 100 पुलिस, मोहतमीन, कोतवाल सर्कल प्रमुख और दो पी.एस.आय. रझाकारों के साथ औराद शहाजानी में पहॅुचे। इतनी शक्ति तथा अधिकारियों की संख्या से ज्ञात हो जाता है कि उन्हें गिरफ्तार करने निजामी शासन सदैव लालाईत रहता, वे एक अहम व्यक्ति थे और अगुवा नेता थे। इसी से उनके हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन के बारे में प्रकट विचार, कार्य का हम अनुमान लगा सकते हैं। इस प्रसंग के पश्चात पंडित वीरभद्रजी आर्य सोलापूर पहॅुच गये। उन्होंने अपना अगला संघर्ष गुप्त रूप से जारी रखा । निजाम सरकार की पैनी नजर पडतेही उन्हें फिर से पकड लिया गया और बीदर के कोर्ट में लाया गया। इसमें उन्हें 6 महिनों की कठोर सश्रम कैद की सजा सुजाई गयी। आगे चलकर सन 1938 में निजाम से मिलने हेतु प्रतिनिधी मंडल की स्थापना की गयी। इस प्रतिनिधी मंडल में भी पंडित वीरभद्रजी प्रतिनिधी के रूप में उपस्थित रहे। पंडित वीरभद्रजी औराद शहाजानी के करीब स्थित गौंडगॉव में भाषण के कारण फिरसे गिरफ्तार किये गये। सन 1940 में भी उन्हें मोहरम के प्रसंग में भी निजाम सरकार ने पंडित वीरभद्रजी आर्य पर शक करते हुए गिरफ्तार किया और निलंगा की जेल में चौदह दिनों तक कस्टडी में रखा गया। इसी तरह आगे उन्हें मेहकर (ता.भालकी, कर्नाटक) गॉव में भी भाषण देने की वजह फिर से गिरफ्तार किया। यह सिलसिला निजाम और उनके लोगों की तरफ से हमेशा होता रहा। फिर भी पंडित वीरभद्र आर्यजी ने आर्य समाज के जरीये जनहित के भाषण देने का कार्य किया।

उसी तरह 24 मई 1941 को रझाकारों द्वारा औराद शहाजानी गॉव जलाया गया। इस समय पंडित वीरभद्रजी आर्य ने इस गॉव की रक्षा करने का कार्य किया। इसी कारण को आगे कर निजामी सरकार ने उन्हें और उनके साथियों को फिर से गिरफ्तार कर लिया और निलंगा की अदालत में पेश किया गया। इसमें उन्हें कई कष्ट दिये गये। दि.14 फरवरी 1942 के दिन उन्हें गुलबर्गा की अदालत में पेश किया गया। इस अदालत में उन्हें सात साल की सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई। गुलबर्गा जेल में उन्हें काफी यातनाऐं सहनी पडी। जिसमें उन्हें रोटी में कॉच का चुरा डालकर दिया जाता। जिससे उनका ऑपरेशन भी हुआ। आगे चलकर पंडित वीरभद्रजी आर्य और उनके साथिदारों ने झंडा सत्याग्रह में सहभाग लिया। इसी वजह से पंडित वीरभद्रजी आर्य को 10 महिनों तक की नजर कैद की सजा भी दी गई।

पंडित वीरभद्रजी आर्य और उनके साथिदारों ने इसी तरह से हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन का कार्य निजामी अन्यायी शासन को समाप्त करने तक संघर्षमय जीवन जारी रखा। उन्होंने अपने जीवन में निजामी शासन काल और हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन के पश्चात भी कई सामाजिक कार्य भी किये। ऐसे महानतम व्यक्तित्त्व का स्वर्गवास 24 दिसम्बर 1994 को हुआ। इस महान व्यक्तित्त्व और उनके साथ हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन से जुडे उनके सभी सहभागी साथियों को शत् शत् नमन!

''यह मत कहो कि जग में क्या कर सकता अकेला,

लाखों में काम करता है शूरमा अकेला ।''

संदर्भ

1. नरेंद्र पंडित, 1973, हैद्राबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष, गोविंदराम हसानंद, दिल्ली
2. आर्य वीरभद्र पंडित, 1998, क्रांतिकारी शेषराव वाघमारे, हैदराबाद मुक्ति संग्रामः एक उपेक्षित संघर्ष गाथा, प्रकाशक देवगिरी प्रतिष्ठान, औरंगाबाद
3. परळीकर अशोक, 1988, हैद्राबादचा पहिला सत्याग्रह
4. सत्याग्रह स्मारिका, 1989, आर्य प्रतिनिधी सभा, हैद्राबाद, आंध्रप्रदेश
5. व्यास प्रकाशचंद्र प्रा., देशबन्धु पंडित वीरभद्र जी का जीवन एवं कार्य परिचय, प्रकाशक– महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा, वाजगांव, नांदेड
6. Dr Vyas C.P., 2019,Hisrographical Study of Hyderabad Freedom Struggle,Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, ISSN 2349-5162,Volume 6, Issue 5, 2019-05-17, Page 84-87